महक उठे शूल

नर्मदा प्रसाद खरे

महक उठे शूल

काव्य-संग्रह

महक उठे शूल

लोक चेतना प्रकाशन
जबलपुर

मूल्य : ८ रुपये
प्रथम संस्करण : १९७५

मुद्रक : लोकचेतना प्रेस, जबलपुर (म० प्र०)

अन्नपूर्णा एवं हरिश्चन्द्र सेठ
को
सस्नेह

क्रम

मुझे अकिंचन ही रहने दो

चाहे तुम कुबेर बन जाओ,
मुझे अकिंचन ही रहने दो।

युग-युग के आराध्य देव तुम, मैं युग-युग से चरण-धूल हूँ,
तुम बसंत के चिरयौवन तो मैं मुरझाया एक फूल हूँ।
तुम पावन गंगा-धारा हो, मैं एकाकी तृषित कूल हूँ,
तुम जीवन की पूर्ण सफलता, मैं जीवन की प्रथम भूल हूँ।
तुम लहरों के सँग-सँग डोलो,
मुझे अकेला ही बहने दो।

तुम विशाल जीवन सागर हो, मैं जीवन की लघु तरंग हूँ,
ज्योति-पुंज जीवन-दाता तुम, मैं याचक प्रेमी पतंग हूँ।
तुम उल्लास-हास के निर्झर, मैं जीवन की नव उमंग हूँ,
तुम जीवन के महाकाव्य हो, मैं जीवन का क्षुद्र अंग हूँ।
तुम चाहे यश-गाथा गाओ,
मुझको अपनी ही कहने दो।

तुम सावन के सजल मेघ हो, मैं दूर्वा-दल का जल-कण हूँ,
तुम विशाल वैभव के अधिपति, जन्म-जन्म का मैं निर्धन हूँ।
तुम जीवन के लक्ष्य सुनहले, मैं पथहारा शिथिल चरण हूँ,
अधर-अधर के मधुर हास तुम, मैं जन-मानस का क्रन्दन हूँ।
बने रहो सुख के स्वामी तुम,
मुझको पीड़ा ही सहने दो।

•

तुम चाहे पीताम्बर पहनो, मुझे दिगम्बर ही रहने दो,
तुम अविनश्वर रहो भले ही, मुझको नश्वर ही रहने दो।
तुम ऋतुपति का गौरव पाओ, मुझको पतझर ही रहने दो,
ताजमहल बन खड़े रहो तुम, मुझको खँडहर ही रहने दो,
निज का नव निर्माण करो तुम,
मुझको सूने में ढहने दो।

•

आधी रात

•

आधी रात, महकता बेला, बोलो, कैसे गंध सँभालूँ ?

•

सुख के झूलों पर सूनापन, मन-कदंब सूखा-मुरझाया,
ऐसे में रंगों का मौसम, फूलों की गलबहियाँ लाया,
आधी रात, पवन बहका है, बोलो, कैसे तुम को पा लूँ ?

•

माटी की साँवरी देह में, अनगिनती फट गयीं दरारें,
दूरी के सूरज का तपना, तीखी किरनों की बौछारें,
आधी रात, दवार लगी है, बोलो, कैसे प्रान जुड़ा लूँ ?

•

बजती नहीं बाँसुरी अब तो, सुर-सरगम पथराये-से हैं,
पलकों पर पहाड़ आ बैठे, रोम-रोम अकुलाये-से हैं,
आधी रात, गीत की वर्षा, बोलो, कैसे मैं भी गा लूँ ?

मुँह-बाये चुपचाप अँधेरा, देखो तो डसने आया है,
ऐसे में बैरी सावन भी, अंगारे झरने आया है,
आधी रात, बिजुरिया कौंधी, बोलो, किसकी बाँह चुरा लूँ ?

•

किसने आँगन-छत-मुँडेर पर ताजी कोमल रुई बिछा दी,
फिर गुलाब-जल छिड़क-छिड़क कर, धीरे से चिनगी सुलगा दी,
आधी रात, चन्द्रमा ऊगा, बोलो, किसको अंग लगा लूँ ?

•

पास पड़ी दुधमुँही चाँदनी, अभी-अभी शबनमी हो गयी,
आकुलता में जकड़ी-जकड़ी, अभी-अभी थी, अभी खो गयी,
आधी रात, हृदय भर आया, बोलो, किसको पास बुला लूँ ?

•

भुनसारे का सगुन सलोना, सच उतरा था, किंतु न आये,
अब कागा की चोंच कौन हाँ, बोलो, सोने से मढ़वाये ?
आधी रात, टिटहरी रोये, बोलो, कैसे धीर बँधा लूँ ?

•

पूरी हो पाई बात नहीं

•

पूरी हो पाई बात नहीं ।
कब चाँद ढला, कब पौ फूटी, कब भोर हुआ, कुछ ज्ञात नहीं ।

•

बातों का ऐसा तार जुड़ा, सारे जग को हम भूल गए,
बातों से फूल झड़े थे जो, अंबर में जाकर फूल गए,
भर गई पवन में मादकता, कण-कण, मधु-कण बन, झूम उठा,
सपने साकार स्वयं होकर जैसे जीवन में झूल गए,
हम, भूल-भूलकर भी अब तक, भूले वह अनुपम रात नहीं ।

•

केवल दो दिन का संग-साथ, घुल-मिलकर भी हम रहे कहाँ ?
रसवंती जीवन-धारा में, डूबे, उतराए, बहे कहाँ ?
संघर्षों की ज्वाला में जल, कंचन बन, हमें निखरना है,
दुनिया के वज्र-प्रहारों के दो-एक वार भी सहे कहाँ ?
पग-पग पर शह तो मिली यहाँ, पर, खाई हमने मात नहीं ।

हम, खेल-खेल ही में हँसकर, जीवन का रंग बदल बैठे,
जाने किन पुण्यों के कारण, हम यहाँ अचानक मिल बैठे,
प्राणों की बाजी लगा, हमें, अंगारों पर पग धरना है,
आपस में प्रीति निभाने को, हम अपने-आप मचल बैठे,
शूलों को फूल बनाकर ही चलना है, यह अज्ञात नहीं।

•

तट की लहरें ही गिनी अभी, सागर में हमें उतरना है,
सागर-मंथन कर हमें, अमृत से अपनी गागर भरना है,
लग जाय होड़ तूफानों से, जीवन की नाव न डगमग हो,
मंजिल पर पहुँच, मिलन-पथ को प्राणों से जगमग करना है,
कण-कण में सोना बरस पड़े, आया वह स्वर्णिम प्रात नहीं।

•

किरन-किरन ने चुम्बन आँके

•

शरद चन्द्र ने तिलक लगाया, वसुंधरा के भाल पर।
किरन-किरन ने चुम्बन आँके, सुमन-सुमन के गाल पर।

•

बन-बीहड़, झाड़ी-झुरमुट में, गाँव-गली में, खेत में,
रजत रश्मियाँ खेल रही हैं, नदी-सरोवर, रेत में,
मधुर चाँदनी की गौरया, आ बैठी हर डाल पर।

•

प्रकृति-नटी के अंग-अंग में, एक अनोखा लास है,
ज्वारित सागर के अंतर में, एक मदिर उल्लास है,
शुभ्र ज्योत्स्ना नर्तन करती, लहर-लहर की ताल पर।

•

स्वयँ रूप ने पुलकित हो कर, नजर उतारी रात की,
मधु-बेला ने अँगड़ाई ली, भूल गयी सुधि प्रात की,
नाच रहा सौन्दर्य मूर्त हो, भू के वक्ष विशाल पर।

•

प्राण, प्राण में उतर चुके हैं, अधर-अधर पर हास है,
रोम-रोम में आकुलता है, नयन-नयन में प्यास है,
हृदय मुग्ध-अनुरक्त हो गया, जग के रूप रसाल पर।

•

आस्था का दीप हूँ—

•

लाख तुम आँधी उठाओ, आस्था का दीप हूँ,
जलता रहूँगा।

•

आँधियों की भीड़ के सम्मुख खड़ा हूँ,
क्षुब्ध सागर की तरंगों से लड़ा हूँ,
कुचल कर, तम के भुजंगों के अहम् को—
लक्ष्य-भेदी तीर-सा आगे बढ़ा हूँ,
लाख तुम तूफान लाओ, मैं स्वयं गतिशील हूँ,
चलता रहूँगा।

•

लक्ष्य-च्युत विद्रोह से ऊबा हुआ हूँ,
अप्रतिम संघर्ष में डूबा हुआ हूँ,
कंटकों ने सिर सदा मुझको झुकाया—
मैं पराजय से निरन्तर अनछुआ हूँ,
लाख तुम बिजली गिराओ, स्नेह का विश्वास हूँ,
पलता रहूँगा।

अनय का कोदंड हँस कर तोड़ दूँगा,
क्रांतियों के विकृत पथ को मोड़ दूँगा,
मनुजता का मूल्य कम होने न दूँगा—
दिग्भ्रमित आक्रोश के घट फोड़ दूँगा,
लाख तुम ताँडव मचाओ, सृजन का संकल्प हूँ,
फलता रहूँगा।

•

अकम्पित दीप पूजा का

●

अकम्पित दीप पूजा का,
हवाओं से नहीं डरता ।

●

झकोरे क्रुद्ध हो टूटे, गजब की आँधियाँ आयीं,
कुहासों ने कहर ढाया, विषैली बदलियाँ छायीं,
अनय के शीश कुचले हैं,
घिरावों से नहीं डरता ।

●

उफनती क्षुब्ध सरिता की तरंगों से लड़ा हूँ मैं,
अकेला नाव खे कर ही स्वयं आगे बढ़ा हूँ मैं,
भँवर से जूझना सीखा,
बहावों से नहीं डरता ।

●

अलक्षित ज्योति-गंगा से अहम् की कालिमा धोयी,
अबोली प्रार्थनाओं में हृदय की रागिनी खोयी,
अनबिंधे मोतियों-सा मन,
दुरावों से नहीं डरता ।

●

अभय की स्नेह-छाया में सदा से पल रहा हूँ मैं,
अनास्था के अँधेरों को निरन्तर दल रहा हूँ मैं,
अडिग विश्वास प्राणों में,
तनावों से नहीं डरता ।

●

सब कुछ बदला-सा लगता है

•

फूलों से काँटे फूट पड़े, नभ से अंगारे झरते हैं,
सब कुछ बदला-सा लगता है।

•

आपाधापी की दुनिया में
घर वालों ने घर लूटा है,
प्रतिबिम्ब सभी टेढ़े-मेढ़े
हर दर्पण टूटा-फूटा है।
चन्दन वन में बारुद छिपी, धुंधायित कोना-कोना है,
सब ओर अंधेरा दिखता है।

•

शब्दों के अर्थ न खुलते हैं,
बदली-बदली-सी भाषा है,
अनुबन्ध सभी निर्मूल्य हुए,
परिवर्तित हर परिभाषा है।
अदृश्य घाव उर-अंतर में, अधरों पर तिक्त खरोंचे हैं,
मनुजत्व स्वयं को छलता है।

झुलसे पर शान्ति-कपोतों के,
घुट रहा गला मानवता का,
चुपचाप सभ्यता देख रही,
नित नग्न नृत्य दानवता का,
झुक गये शीश आदर्शों के, संकल्पों की साँसें टूटीं,
अपमानित करुणा-ममता है।

•

फूलों के मौसम ने

•

फूलों के मौसम ने खोल दिये द्वार !

•

टेसू के लहक उठे,
अरुणीले प्राण,
सरसों ने पहिन लिये,
पीले परिधान,
जंगल में आन्दोलित मंगल त्योहार !

•

सोने के पानी से,
अभिसिंचित बौर,
कोकिल के गीतों से,
गुंजित हर ठौर,
वन-उपवन फूल-फूल, लुटा रहे प्यार !

•

घाटियों-कछारों की
पी कर मुसकान,
मलयानिल संधाने,
सुरभीले बान,

[illegible] में मंगल,
धरती ने सजा लिये सा[illegible]हे हैं,

•

महकीली कलियों ने
बिखरा दी गंध,
फूल-फूल लुटा रहे,
मादक मकरंद,
सपनों से नयन अँजे, प्राणों में ज्वार !
फूलों के मौसम ने खोल दिये द्वार !

•

फूलों की बारात आ गई

•

नव वसन्त का दूल्हा लेकर,
फूलों की बारात आ गयी ।

•

पीली पाग, हरी अचकन में
स्वागत करने आम खड़े हैं,
टेसू लाल अँगरखा पहिने
अगवानी के लिए अड़े हैं ।
मंगल-गान कोकिला गाकर
कोने-कोने गुंजा रही है,
भौरों की रसभीनी गुन-गुन
शहनाई को लजा रही है ।
सजी-धजी दुलहिन-सी धरती,
खुशियों की सौगात पा गयी ।

•

नाच उठा जंगल में मंगल,
झाड़ी-झुरमुट झूम रहे हैं,
पर्वत-टीले, घाट-घाटियाँ
मलय-झकोरे चूम रहे हैं ।
चहक उठे डालों पर पंछी,
झरनों में संगीत घुल गया,
कूल-कगार, कछारों पर फिर
हरियाली का हास खिल गया ।
प्रीति-पराग बिछ गया पथ पर,
दिग्-दिगन्त मधु-गंध छा गयी ।

•

नये रँगीले वस्त्र पहिनकर
मौसम ने श्रृंगार कर लिया,
अधरों को बाँसुरी सौंप दी,
प्राणों में अनुराग भर दिया ।
दुख के पीले पात झर गये,
सुख की मृदुल कोंपलें आयीं,
आशाओं के पीके फूटे,
नयी उमंगें फिर अँकुरायीं ।
मधु बयार उल्लास लुटा कर
द्वार-द्वार पर गीत गा गयी ।

•

मेरा वैरागी मन डोला

•

प्रकृति-सुन्दरी ने पुलकित हो, फिर सोलह शृंगार किये,
मेरा वैरागी मन डोला, भगवे वस्त्र उतार दिये ।

•

डोरे लाल हुए नयनों के
अधरों पर मधु-हास खिला,
नस-नस में मादकता जागी,
प्राणों को उल्लास मिला ।
रूप-गगन में मन-पंछी ने, हँस कर पंख पसार दिये ।

•

संयम की जंजीरें टूटीं,
फिर अनंग का तीर चला,
रंग-गुलाल भरी झोली ले,
अल्हड़ मलय समीर चला ।
भौरों के सम्मुख कलियों ने, घूँघट विहँस उघार दिये ।

•

तुलसी की माला के मनके
एक-एक कर टूट गये,
ज्ञान-ध्यान, पूजन-अर्चन सब,
जाने कैसे छूट गये !
प्रणय-सिन्धु में उतर पड़ा फिर जीवन की पतवार लिये ।

•

तन की भस्म-भभूत पोंछ कर
दंड - कमंडल तोड़ दिये,
फिर विरक्ति अनुरक्ति बन गयी,
जग से नाते जोड़ लिये ।
सारी उमर रहन रख मैंने, ये मधु-मास उधार लिये ।
मेरा वैरागी मन डोला, भगवे वस्त्र उतार दिये ।

•

बड़ो कृपा की

•

हृदय-रक्त से लिखी गीतिका,
बिना पढ़े वापस भिजवा दी,
—बड़ी कृपा की ।

•

प्राणों के अनुबंध मुखर हो,
शब्द-शब्द में बोल रहे थे।
स्नेह-सिक्त मीठी यादों के—
पृष्ठ सुनहले खोल रहे थे ।
वर्तमान में जीने वाले,
विस्मृत कर देते अतीत को,
प्रीत-पगी पहिचान पुरानी,
तुमने सूली पर लटका दी,
—बड़ी कृपा की ।

•

हर क्षण मुख से फूल बरसते,
रूप निहार चाँद शरमाता,
सुख-सौभाग्य निछावर तुम पर,
वैभव रत्न-प्रदीप जलाता ।
जन्म-दिवस पर सहज भाव से
हँस कर तुम्हें बधाई दी तो—
सब के बीच अपरिचित बन कर,
एक भूमिका और निभा दी,
—बड़ी कृपा की ।

•

तुम फूलों से लदी डाल हो,
पतझर की पीड़ा क्या जानो ?
टूटे इन्द्रधनुष के बिखरे—
रंगों को कैसे पहिचानो ?
अनचाहे ही व्यथा-कथा ले—
द्वार तुम्हारे जा पहुँचा था,
पाषाणी बन, अधर सी लिये,
हाथ जोड़ कर मूक विदा दी,
—बड़ी कृपा की ।

•

गीतों की बरखा में

•

कजरारे मेघों का छंद-छंद बोल रहा,
नये रंग घोल रहा ।

•

गीतों की बरखा में, पोर-पोर भींग रहे,
प्राणों के आर-पार, चन्दन की गंध बहे,
ऐसे में गोरी तुम
हँसकर निहारो तो
जी भर दुलारो तो,
पीपल की फुनगी पर, मन मेरा डोल रहा ।
कजरारे मेघों का छंद-छंद बोल रहा ।

•

कनखी से झाँको ना, रूप रीझ जायेगा,
फागुन बौरायेगा, पुलक-पुलक गायेगा,
आज मुझे बाँधो ना
आँचर के छोर में
काजर की कोर में,
बौराया पवन बहक, बंद नयन खोल रहा ।
कजरारे मेघों का छंद-छंद बोल रहा ।

जूही की गंध-साँस अभी-अभी सोयी है,
शबनमी कपोलों पर अभी हँसी रोयी है,
प्राण ! तनिक हुलसो ना
हृदय की हिलोर में
खुशियों की भोर में
चाँद वहाँ नीमों पर अमृत-घट ढोल रहा ।
कजरारे मेघों का छंद-छंद बोल रहा ।

•

अरे, जरा बरसो ना, बड़ी उमस लगती है,
किरन-किरन टेर रही, रात अभी जगती है,
और अधिक विरमो ना
सपनों की भीर में
यमुना के तीर में
मन मेरा सपनों को, हँस-हँस कर तोल रहा ।
कजरारे मेघों का छंद-छंद बोल रहा ।।

•

आँगन में फूल उठे किरनों के फूल

•

आँगन में फूल उठे, किरनों के फूल
चाँदनी सँवार रही रेशमी दुकूल ।

•

नयन-नयन बोल रहे
अनबोले बोल,
अधर-अधर आँक रहे
गीतों का मोल ।
सपनों में डूब गये, जीवन के कूल ।
आँगन में फूल उठे, किरनों के फूल ।

•

धरती पर छन्द उगे,
गाये आकाश,
मधुबेला खोज रही
आकुल भुज-पाश ।

फूलों की कौन कहे, महक उठे शूल ।
आँगन में फूल उठे, किरनों के फूल ।

•

तन-मन में आग जगी,
लहकी हर साँस
स्वप्न स्वयं आ बैठे,
अधरों के पास ।
जी करता, दुहरायें, प्यार-भरी भूल ।
आँगन में फूल उठे, किरनों के फूल ।

•

वर्तमान नाच उठा, मर चुका अतीत

•

जंगल में गूँज उठे, झरनों के गीत ।

•

झरबेरी चकित खोल
झुरमुट के द्वार,
मुग्ध-मगन झाँक रही
छवि का अवतार,
पत्थर के प्राणों से झरता संगीत ।

•

टेसू के रक्त-कुसुम,
आमों के बौर,
पूजन को ललक उठे,
पुलकित हर ठौर,
भक्तों की कमी नहीं, मनमाने मीत ।

•

महुआ सागौन, नीम,
आँवला, बबूल,
लहक-लहक झूम रहे,
सुध-बुध सब भूल,
वर्तमान नाच उठा, मर चुका अतीत ।

•

खोहों तक जा पहुँचे
निर्झर के गान,
सिंहों का चूर हुआ
पल में अभिमान,
गर्जन का गर्व गला, गीत गया जीत ।

•

मंगल-दीप जलाये होंगे

•

सूने घर-आँगन में तुमने
मंगल-दीप जलाये होंगे ।

•

अधरों पर मधु-गीत न होगा,
जीवन में संगीत न होगा,
विगत दिनों में डूब-डूब कर
नयन नीर भर लाये होंगे ।

•

एकाकीपन हँसता होगा,
पल-पल तुमको डसता होगा,
भूले-बिसरे चित्र मिलन के
अन्तर्पट पर आये होंगे ।

•

सारा जग जब सोता होगा,
हृदय तुम्हारा रोता होगा,
अन्तर्नभ में उमड़-घुमड़ कर
सुधि के बादल छाये होंगे ।

•

रूप न अपना भाता होगा,
बेबस मन अकुलाता होगा,
दर्पण में प्रतिबिम्ब स्वयं के
तुम्हें न किंचित भाये होंगे ।

•

नींद न तुमको आती होगी,
स्वयं कहीं खो जाती होगी,
तारों से बातें कर तुमने
युग-से प्रहर बिताये होंगे ।

•

रात-रात भर नींद न आती

रात-रात भर नींद न आती,
सूनेपन में याद तुम्हारी बरबस और घनी हो जाती ।

पल में चाँद गगन में हँसता, पल में बदली में छिप जाता ।
तारों से बातें हो जातीं, पर न चाँद से कुछ कह पाता,
खोया-खोया-सा रह जाता, याद तुम्हारी बहुत सताती—
रात-रात भर नींद न आती ।

भूले-बिसरे गीत उमड़ कर, जाने क्या-क्या कहने लगते,
नीरवता को चीर तुम्हारे स्वर आ मुझमें बहने लगते,
मन की पीर नयन में छा कर, अनजाने बरसात मचाती—
रात-रात भर नींद न आती ।

हर क्षण संग तुम्हारा रहता, दोनों हाथों प्यार लुटातीं,
साँस-साँस में आती-जातीं, पर जाने क्यों हाथ न आतीं,
मेरी ही परछाईं जैसे हँसती, गाती, रास रचाती—
रात-रात भर नींद न आती ।

मलयानिल से तुमको पूछा, कुंज-कुंज में पता लगाया,
प्राण, तुम्हारी अगवानी में, आँधी में भी दीप जलाया,
अरे, मिलन की भोली आशा, कभी हँसाती, कभी रुलाती—
रात-रात भर नींद न आती ।

मैं ऐसा शोला हूँ जिसकी आँखों में सागर लहराता,
ऊपर से हँसता-गाता हूँ, भीतर ही भीतर धुँधवाता,
बीच भँवर में नाव फँसी है, डूब-डूब कर जो उतराती—
रात-रात भर नींद न आती ।

मुझ पर नाराज न होना तुम

•

मुझ पर नाराज न होना तुम ।
मैं लाख अरे अपराध करूँ, फिर भी नाराज न होना तुम ।
मुझ पर नाराज न होना तुम ।

•

मैं अपने मन का राजा हूँ, मनमानी करता आया हूँ,
हँस कर अंगारों के पथ पर निर्भय पग धरता आया हूँ,
मैं देव नहीं हूँ, मानव हूँ, मानव से भूलें होती हैं,
भूलों के फूलों से ही तो निज झोली भरता आया हूँ,
जीवन के सुख-दुख, पाप-पुण्य, सब साथ-साथ ही ढोना तुम–
मुझ पर नाराज न होना तुम ।

•

फूलों से प्यार सभी करते, शूलों से सब घबराते हैं,
सब राजमार्ग पर चलते हैं, बीहड़ से आँख चुराते हैं,
शूलों से मुझको प्यार बहुत, बीहड़ में चलना भाता है,
मुझ अलबेले को देख सभी, जाने क्यों भृकुटि चढ़ाते हैं !
दुनिया की नजर न लग जाये, बन जाना अरे डिठौना तुम,
मुझ पर नाराज न होना तुम ।

•

तुम चाहे रूठ-मचल लेना, गुस्से से लाल न हो जाना,
मैं हँस कर तुम्हें मना लूँगा, आँखों में आँसू मत लाना,
तुम मेरी मानिनि राधे हो, मैं मान तुम्हारा सह लूँगा,
तुम मेरी प्यारी भूलों को, मुझसे भी ज्यादा दुलराना,
मैं अपनी पर आ जाऊँ तो, मत कभी रूठ कर रोना तुम,
मुझ पर नाराज न होना तुम ।

•

हाँ, कभी भूल कर भी मुझ पर, अंकुश मत अरे लगाना तुम,
मैं भला-बुरा जैसा भी हूँ, आँखें मत मुझे दिखाना तुम,
शासन ही मुझ पर करना है तो नत-मस्तक हो जाना तुम,
मैं स्नेह-प्यार का भूखा हूँ, मुझ पर ममता बरसाना तुम,
मेरी ही इच्छा पर जगना, मेरे इंगित पर सोना तुम,
मुझ पर नाराज न होना तुम ।।

•

केवल एक बार मुस्का दो

•

प्रस्तर-प्रतिमा बन मत बैठो,
केवल एक बार मुस्का दो, कली चटक कर मुस्का देगी।

•

ऐसा भी क्या रूप कि जिसने
जीवन का मधु-गीत न गाया,
तारों से गुपचुप बातें कीं
मीठे सपनों को दुलराया,
मेघों का आवरण हटा लो,
रूप उजागर हो जाने दो, सुषमा स्वयं गीत गा देगी।

•

ऐसा भी क्या मान कि जिससे
प्राणों में काँटे उग आयें,
गन्ध लुटाने के पहले ही
फूलों की चाहें मर जायें,
ढीले करो मान के बन्धन,
हँसी अधर से चू जाने दो, फिर तो हँसी गजब ढा देगी।

ऐसा भी क्या मौन कि जिससे
मधुर प्रतीक्षा घुटती जाये,
आकुलता की आग स्वयं ही
बिना बुझाये बुझती जाये,
बहुत हो चुकी मौन-साधना,
जीवन को अपने स्वर दे दो, हर धड़कन रस छलका देगी।

•

ऐसा भी क्या प्यार कि जिससे
प्राण-प्राण लहलहा न जायें,
ज्वारित मुक्त हिलोरें जिसकी
जीवन के तट भिगो न पायें,
अन्तर्मन के गीत सलौने
केवल एक बार तुम गा दो, दुनिया उनको दुहरा देगी।

•

यह क्या कम है ?

•

एक बार अपने ओंठों से–
तुमने मेरा नाम ले लिया, यह क्या कम है ?

•

टेढ़ी-मेढ़ी हर पगडण्डी, आखिर मंजिल पा ही जाती,
चिड़िया भी तो घास-पात से, आखिर अपना नीड़ बनाती,
तुम दुनिया से अलग नहीं हो, कितने दिन सपने बहलाते ?
कब तक जलते प्राण तुम्हारे, ओस चाट कर प्यास बुझाते ?
उस दिन जाते-जाते तुमने–
मेरा मौन-प्रणाम ले लिया, यह क्या कम है ?

•

फूलों वाली डाल एक दिन, बरबस जीवन पर झुक आयी,
प्राणों को मिल गया कि सरगम, अधरों ने मधु वंशी पायी ।
मैंने गीत रचे कितने ही, पंक्ति-पंक्ति तुमने दुहरायी,
और तुम्हें क्या दे सकता था ? गीतों की माला पहनायी ।
उस दिन गीतों का संग्रह ले–
उसका पूरा दाम दे दिया, यह क्या कम है ?

•

जीवन के अधफटे पृष्ठ पर, अब भी अंकित नाम तुम्हारा,
स्याही फीकी पड़ी न अब तक, हर अक्षर उतना ही प्यारा,
सुख के स्वर्णिम बादल बरसे, दुख की भीषण आँधी आयी,
किन्तु आज तक कभी न तुमने, सुख-दुख की पाती भिजवायी।
उस दिन चार पंक्तियाँ लिख कर–
हाथों से कुछ काम ले लिया, यह क्या कम है ?

•

एक अनुभूति

•

बहुत स्वर फूँकता हूँ मैं,
हठीली प्रान की वंशी
नहीं बजती, नहीं बजती।

•

घिरे हैं नींद के बादल, मधुर सपने बरसते हैं,
किसी के मात्र दर्शन को, नयन कब से तरसते हैं,
अरे, सब ओर मृग-जल है, तरसना ही तरसना है,
बहुत संयम किया मैंने
मगर यह बावरी तृष्णा
नहीं बुझती, नहीं बुझती।

•

निपट सुनसान जंगल है, न कोई पास दिखता है,
अँधेरा गुमसुमी का ही कि जैसे गीत लिखता है,
सभी कुछ तो बिराना है, भटकना ही भटकना है,
बहुत मनुहार करता हूँ,
मगर कोई किरन-गोरी
नहीं मिलती, नहीं मिलती।

•

अधूरे गीत को अब तो, न कोई शब्द मिलता है,
कभी, हाँ, भूल से ही तो, न कोई फूल खिलता है,
अरे, सब ओर लपटे हैं, झुलसना ही झुलसना है,
बहुत मैं यत्न करता हूँ
मगर यह साँवरी बदली
नहीं झरती, नहीं झरती।

•

युगों से एक ही गति से, समय-रथ-चक्र चलता है,
अँधेरा चीर कर ही तो सदा सूरज निकलता है,
अजब है यार यह दुनिया, बिफरना ही बिफरना है,
बहुत इसको झुकाता हूँ,
मगर यह संग-दिल दुनिया
नहीं झुकती, नहीं झुकती।

•

उफनता ज्वार है सम्मुख, किनारे टूटते जाते,
दिशायें ढँक गयीं सारी, अँधेरे फूटते आते,
सभी कुछ दिग्भ्रमित-सा है, बिखरना ही बिखरना है,
निरन्तर खे रहा हूँ मैं,
मगर यह नाव जीवन की
नहीं चलती, नहीं चलती।

•

गीत मैं गाता रहूँगा

•

सामने बैठी रहो तुम, गीत मैं गाता रहूँगा,
स्वर्ग का सुख, धरा पर ही, मैं सदा पाता रहूँगा।

•

चित्र जो तुमने बनाये, रंग मैं उनमें भरूँगा,
स्वप्न जो तुमने सँजोये, सत्य मैं उनको करूँगा,
नत-नयन, अरुणाभ मुख ले, रूप का दीपक जलाये—
नव-वधू-सी बैठ जाना, लाज मैं पल में हरूँगा,
बिन बुलाये द्वार पर ऋतुराज मैं लाता रहूँगा।
सामने बैठी रहो तुम, गीत मैं गाता रहूँगा।

•

साँस के हर तार से प्रति पल अमर संगीत झरता,
हाँ, वही संगीत ही तो गीत में मेरे उतरता,
मैं तुम्हारे गीत तुम पर ही सदा हँस कर चढ़ाता,
गीत ओठों पर तुम्हारे हास बन-बन कर बिखरता,
सुख-सुरभि, मधु-प्यार के घन, मैं सदा छाता रहूँगा।
सामने बैठी रहो तुम, गीत मैं गाता रहूँगा।

•

आ बसो तुम धड़कनों में, जिन्दगी बढ़ती रहेगी,
चार आँखें प्रणय-गाथा परस्पर पढ़ती रहेंगी,
प्राण प्राणों में उतर कर गीत की रचना करेंगे,
गीत-मालायें निरन्तर, तुम्हीं पर चढ़ती रहेंगी,
मैं बिना मधुमास के ही फूल बरसाता रहूँगा।
सामने बैठी रहो तुम, गीत मैं गाता रहूँगा।

•

मैं न तुम बिन गा सकूँगा, तुम हृदय की रागिनी हो,
मैं तुम्हीं से राग-रंजित, क्योंकि तुम अनुरागिनी हो,
नयन पूजा-दीप बन कर आरती करते रहेंगे,
तुम जुही के फूल-सी सुकुमार, मधुमय चाँदनी हो,
एक क्षण तुम मुस्करा दो, युगों मुसकाता रहूँगा।
सामने बैठी रहो तुम, गीत मैं गाता रहूँगा॥

•

नयी आस्था

•

धुनके हुए कपास सरीखा, फूला-फूला नरम-नरम-सा,
पर भीतर से बहुत कड़ा मैं, हाँ, पत्थर हूँ ।

•

जी, गुलाब मैं, रूप-रंग रस-गंध भरा हूँ,
नये-नये अंकुर फूटे हैं, जहाँ झरा हूँ,
ऐसे भी कितने गुलाब हैं, जिनमें एकमात्र अब काँटे,
जिन पर कभी न मौसम रीझा, जिनने केवल खाये चाँटे ।
इसीलिए मैं मौसम से संघर्ष करूँगा,
नहीं डरूँगा ।
चट्टानों को फोड़ बहा हूँ, मैं निर्झर हूँ ।

•

दूध भरे खौले कढ़ाव से, अनगिनती फुटकियाँ उड़ रहीं,
ऐसे धुँआधार का ही मैं, जड़-प्रस्तर हूँ ।
चिर विश्वासी, क्षण-प्रति-क्षण चोटें सहता हूँ,
आह न करता, संघर्षों में रत रहता हूँ,
ऐसे भी कितने पत्थर हैं, कहीं नींव में दबे पड़े जो,
दुनिया की अन्धी आँखों ने कब पहिचाना, सदा गड़े जो,
इसीलिए मैं दुनिया से विद्रोह करूँगा,
आग भरूँगा,
ढहा चुका तम के पहाड़ जो, वह दिनकर हूँ ।

चन्द्र भाल पर, सिर पर गंगा, कंठ हलाहल से शोभित है,
औघड़दानी प्रलयंकर का, मैं अनुचर हूँ ।
कालजयी हूँ, हँसते-हँसते जहर पी गया,
बरस-बरस कर रिक्त हो गया, और जी गया,
ऐसे भी कितने पोखर हैं, जो अब भी खाली के खाली,
जिनमें कभी न लहरें नाचीं, कभी तरंगित हुई न लाली,
इसीलिए मैं कालिय-दह में उतर पड़ूँगा,
सतत लड़ूँगा,
महाकाल मेरी मुट्ठी में, शिव का वर हूँ ।

•

पत्थर जहाँ न पूजे जाते, बनता नहीं रक्त का चन्दन,
ऐसे भाव भरे प्राणों का, पूजाघर हूँ ।
मेरी पूजा–उठे घनों में, जुते बखर में,
श्रम से फूटी गंग-धार की लहर-लहर में,
रक्त-कमल की भेंट चढ़ा कर, कोई कभी न अक्षत डाले,
महलों के उपवन में फूले, फूल चढ़ा, घी-दीप न बाले,
इसीलिए मैं करुणा का आवाहन करता,
चरण परसता ।
रोम-रोम शीतल कर देता, मैं जलधर हूँ ।

मैं हूँ गीत दुलार का

•

मुझे न तुम यों ही दुतकारो,
मेरे प्राणों में तो उतरो,
मैं हूँ गीत दुलार का–
जीवन की ललकार का।

•

जीवन-निर्झर के अधरों से
फूटा हुआ प्रसंग हूँ,
शब्द-शब्द मेरे मोती हैं,
प्राण-प्राण के संग हूँ,
भट्टी में तप कर निखरा हूँ,
मैं हूँ गीत दुलार का–
मैं कंचन हूँ प्यार का।

•

शूलों पर फूले फूलों की
मुक्त मुखर मुसकान हूँ,
छंद-छंद में, गंध-गंध में
गुंजित जीवन-गान हूँ,
मेरी साँसों में गुलाब हैं,
मैं हूँ गीत दुलार का–
मैं हूँ गीत बहार का।

रागमयी संध्या का कुंकुम,
मैं सोने की भोर हूँ,
निर्मल हँसी-भरी सरिता की
ममता-भरी हिलोर हूँ,
ज्योति-विहग, किरनीले स्वर हैं,
मैं हूँ गीत दुलार का–
प्यार भरे संसार का।

•

मैं न भुजंगों से डरता हूँ,
मैं चन्दन की बास हूँ,
कभी कमल-सा खिल जाता हूँ,
दिखता कभी उदास हूँ,
मुझ में भौंरों की गुनगुन है,
मैं हूँ गीत दुलार का–
जीवन के विस्तार का।

•

पके धान पर झूम रहा हूँ
मैं मेघों की छाँव में,
मेरा हास चुआ करता है,
मनभावन के गाँव में।
रश्मि-रथी हूँ, जीवनमय हूँ,
मैं हूँ गीत दुलार का–
मैं हूँ गीत फुहार का।

•

सत्य-साधना का बेटा मैं,
स्वयँ एक संसार हूँ,
आँखों में सागर बंदी है,
करुणा का अवतार हूँ।

अन्तर को मैंने भाषा दी,
मैं हूँ गीत दुलार का—
मन की करुण पुकार का।

•

मैं वाणी का राजहंस हूँ,
पंखों पर विश्वास है।
नील गगन मेरी मुट्ठी में
ओंठों पर मधुमास है।

तार-तार मेरे बजते हैं,
मैं हूँ गीत दुलार का—
विद्रोही हुंकार का।

•

वर्तमान मेरी नस-नस में,
जीवन का संगीत हूँ
मेरे कंधे पर भविष्य है,
मैं अतीत का गीत हूँ।

नये गीत का हस्ताक्षर हूँ,
मैं हूँ गीत दुलार का—
मैं हूँ गीत विचार का।

•

सूर्यमुखी मन मेरा

•

पौ फूटी, सूर्यमुखी मन मेरा फूल गया।

•

फूलों की गोदी में, मन मेरा लेटा है,
ममता के आँचर में, साहस का बेटा है।
बहुरंगी हाथों ने बार-बार भेंटा है,
नन्हीं हरी दूब ने अंक में समेटा है।
किरनों के झूले में मुग्ध-मगन झूल गया।
पौ फूटी, सूर्यमुखी मन मेरा फूल गया।

•

खेतों के कंचन पर, मन मेरा बिखरा है,
आतप की ज्वाला में, झुलस-झुलस निखरा है।
अगम-अतल सागर में, निर्भय हो उतरा है,
सुरभीली साँसों पर साँपों का पहरा है।
काल को कँपाता हूँ, बहुत गड़ा, शूल गया।
पौ फूटी, सूर्यमुखी मन मेरा फूल गया।

•

सूरज के घोड़े पर, बुन्देला बैठा है,
किरण-बाण छोड़ रहा, रोबीला चेहरा है।
दूर कहीं दुश्मन का, षड्यन्त्री घेरा है,
सर्पों की भीड़-भाड़, तमसा का डेरा है,
तड़-तड़-तड़ दौड़ रहा, सुध-बुध सब भूल गया।
पौ फूटी, सूर्यमुखी मन मेरा फूल गया।

•

एक दीप जल रहा

•

एक दीप जल रहा,
अन्धकार दल रहा।

•

मिट्टी की देह में,
प्यार के सनेह में,
किरनीले गीत गा,
ममता के गेह में,
अधर-ज्वाल चूमने–
युगों से मचल रहा।
एक दीप जल रहा।

•

तिमिर-शीश काटता,
नव प्रकाश बाँटता,
शूल-फूल-धूल में,
स्वर्ण-किरण टाँकता,
आँधी-तूफान में,
युग-युग से पल रहा।
एक दीप जल रहा।

•

किरनों पर नाचता,
दीपित स्वर जाँचता,
ज्वालित आकाश के
शब्द-शब्द बाँचता,
अमर ऊर्ध्व शिखा ले,
लहक-लहक बल रहा।
एक दीप जल रहा।

•

शब्द-छन्द-गान को,
प्रीति-पगे प्रान को,
बूँद को, समुद्र को,
धरा-आसमान को,
ज्योतित मुसकान दे
मुग्ध-मगन ढल रहा।
एक दीप जल रहा।

ऐसा यत्न करो कुछ भाई–

•

ऐसा स्नेह-दान तुम दे दो, बुझते दीपक फिर जल जायें,
अधर-अधर से हास चू पड़े, प्राण-प्राण आशीष लुटायें ।

•

सिसक रहीं कलियाँ उपवन की
फूलों का मुख भी उदास है ।
माली ओंठ सिये बैठा है,
धुँआ उठ रहा आस-पास है ।
ऐसा सुख-सौरभ सरसा दो, मधु-ऋतु डोले दायें-बायें,
अधर-अधर से हास चू पड़े, प्राण-प्राण आशीष लुटायें ।

•

पनघट पर अब भीड़ नहीं है,
दूर पड़ी रोती है गागर ।
प्यास बिचारी सिर धुनती है,
और कहीं बन्दी है सागर ।
ऐसे सजल मेघ बरसा दो, तृषित कण्ठ निज प्यास बुझायें,
अधर-अधर से हास चू पड़े, प्राण-प्राण आशीष लुटायें ।

•

आहों पर पहरा बैठा है,
रोने पर प्रतिबन्ध लगा है ।
मौत बहुत सस्ती है अब तो,
कफ़न और मरघट मँहगा है ।
ऐसे करुणा-घन बरसा दो, सारे कष्ट-क्लेश धुल जायें,
अधर-अधर से हास चू पड़े, प्राण-प्राण आशीष लुटायें ।

•

न्याय स्वयँ नीलाम हो गया,
सूली पर ईमान चढ़ा है,
पूजा को खा गया पुजापा,
और मौन भगवान खड़ा है !
ऐसा यत्न करो कुछ भाई, कुछ तो जीवन का सुख पायें,
अधर-अधर से हास चू पड़े, प्राण-प्राण आशीष लुटायें ।

•

जीवन हो सच्चा प्रकाश है

•

आओ, ऐसा दीप जलायें–
बाती सदा बुझा ही करती, किरणें कभी न बुझने पायें।
मिट्टी तो आखिर मिट्टी है, गलना उसका सहज धर्म है।
जीवन ही सच्चा प्रकाश है, जलना उसका सहज कर्म है।
ऐसे प्यारे गीत रचो तुम, अधर-अधर जिनको दुहरायें।
आओ, ऐसा दीप जलायें ।।

•

पत्थर तो आखिर पत्थर है, एक दिवस निश्चित टूटेगा।
मूल्यवान आलेख भले हो, एक दिवस निश्चित छूटेगा।
ऐसी पावन मूर्ति बनो तुम, मंदिर-मंदिर गौरव पायें।
आओ, ऐसा दीप जलायें ।।

•

मंदिर तो आखिर मंदिर है, जीर्ण-शीर्ण हो ढह जायेगा।
ढहते-ढहते नश्वरता की, मूक कहानी कह जायेगा।
ऐसा पावन तीर्थ बनो तुम, नर-नारी सब शीश झुकायें।
आओ, ऐसा दीप जलायें ।।

•

जीवन तो आखिर जीवन है, कभी अपावन हो सकता है।
ज्ञान-ध्यान, पूजन-वंदन भी, किसी एक क्षण खो सकता है।
ऐसी अन्तर्ज्योति जगाओ, सारे अंधकार धुल जायें।
आओ, ऐसा दीप जलायें ।।

मेरा मन भटक-भटक जाता है।

•

एक बहुत बड़ी हरी-भरी चूनर में
मन मेरा बिरम-बिरम जाता है।
सौंधीली माटी में, धान गीत गाता है।

एक बहुत बड़ी जंगल की ज्वाला में
मन मेरा झुलस-झुलस जाता है।
टेसू की लपटों में, डूबता-नहाता है।

एक बहुत बड़ी मौसम की पाती में
मन मेरा विकस-विकस जाता है।
एक-एक अक्षर को, गुपचुप दुलराता है।

एक बहुत बड़ी फूलों की घाटी में
मन मेरा महक-महक जाता है।
गंधों के मेले में, कुछ न सोच पाता है।

एक बहुत बड़ी बर्फीली चोटी पर
मन मेरा फिसल-फिसल जाता है।
एक कदम धरता है, तुरत लौट आता है।

एक बहुत बड़ी सोने की चादर में
मन मेरा लिपट-लिपट जाता है।
किरनों का संग-साथ, मुझे बहुत भाता है।

एक बहुत बड़ी तारों की जाली में
मन मेरा उलझ-उलझ जाता है।
एक-एक तारे में, स्वयँ झिलमिलाता है।

एक बहुत बड़ी चंदा की डोली में
मन मेरा बहक-बहक जाता है।
जूही की कलियाँ चुन, सेज पर बिछाता है।

एक बहुत बड़ी हंसों की टोली में
मन मेरा भटक-भटक जाता है।
मोती बिखराता है, कुछ न हाथ आता है।

एक बहुत बड़ी तटविहीन सरिता में
मन मेरा उतर-उतर जाता है।
तृप्ति कहाँ पाता है, तट को अकुलाता है!

•

फागुन के दिन

•

फूलों के चौक पुरे, फागुन के दिन।

•

आमों को मौर मिले,
टेसू-कचनार खिले,
किसलयी कपोलों पर
पुरवैया धूल मले,
मौसम परिहास करे, फागुन के दिन।

•

अंग-अंग गंध भरे,
अधरों से हास झरे,
सजी-धजी प्रकृति-वधू
फूलों पर चरण धरे,
नया रंग ले उतरे, फागुन के दिन।

•

मलय पवन बहक उठी,
गली-गली महक उठी,
मंजरित रसालों पर
कोयलिया कुहुक उठी,
रीते मधु-कलश भरे, फागुन के दिन।

•

मधुऋतु का बाण लगा,
गुपचुप हेमन्त भगा,
सुषमा के नयन खुले—
सोया सौन्दर्य जगा,
पलकों पर आ ठहरे, फागुन के दिन।
फूलों के चौक पुरे, फागुन के दिन।

गीत

फागुनी बहारों के चटकीले दिन।

मुग्ध-मगन मलय पवन
फूलों के गाल चूम,
रसभीनी गंध लुटा
थिरक रही झूम-झूम।
फागुनी बहारों के अरुणीले दिन।

घूँघट-पट खोल-खोल,
कलियाँ हँस चटक रहीं।
अलियों से गाँठ जोड़,
पुलकित हो भटक रहीं।
फागुनी बहारों के मदिरीले दिन।

सतरंगी चोली पर
पीले परिधान पहिन,
फूलों की डोली ले–
आ उतरी नव दुलहिन।
फागुनी बहारों के सुरभीले दिन।

कोकिल ने तान भरी,
पंचम स्वर मचल उठे,
मन्मथ के बाण चले–
वैरागी पिघल उठे।
फागुनी बहारों के बहकीले दिन।

धीरे से मुझे जगा देना

•

चुपचाप उषा-सी आकर तुम, धीरे से मुझे जगा देना,
विहगों के मंजुल स्वर में फिर बिन कहे प्रभाती गा देना।

•

अपनी अनुराग-अरुणिमा से कण-कण अनुरंजित कर देना,
अपने जीवन की लाली तुम मेरे जीवन में भर देना,
मेरे जीवन का कालकूट तुम हँसते-हँसते हर लेना,
अमृत के घट छलका कर फिर दो घूँट अधर पर धर देना,
जीवन की डाली-डाली में मनचाहे फूल खिला देना।

•

तुम आती हो तो जीवन में सचमुच बहार आ जाती है,
मुसकान-मधुरिमा की बदली, मन-प्राणों पर छा जाती है,
सुख-सौरभ झरने लगता है, दिशि-दिशि हँसती है, गाती है,
अम्बर से फूल बरसते हैं, धरती त्यौहार मनाती है,
तुम तो रस की निर्झरिणी हो, सारे दुख-ताप मिटा देना।

•

मेरे मन के मृगछौने को तुम हँस-गा कर दुलराती हो,
वह हर क्षण अरे मचलता है, तुम हर क्षण उसे मनाती हो,
मैं नहीं जानता ऐसा क्या, जाने तुम मुझ में पाती हो,
जो मेरे हर सपने को तुम, खुद मिट कर सत्य बनाती हो,
मैं अब तुम में खो जाऊँगा, तुम निज में मुझको पा लेना।

•

जब पास नहीं होतीं तुम तो, तब जाने कैसा लगता है,
जिस ओर जहाँ तुम जाती हो, उस ओर वहीं मन भगता है,
मैं बाँध-बाँध कर हार गया, मन बाँधे से क्या बँधता है?
मैं भूल नहीं सकता तुमको, सच, मेरी यह दुर्बलता है।
तुम मेरी इस दुर्बलता का चाहे जो अर्थ लगा लेना।

एक पंथ के दो पंथी हम–

•

एक पंथ के दो पंथी हम, अनजाने मिल गये यहाँ पर,
साथ-साथ यदि बढ़े चलें तो निश्चित मंजिल मिल जायेगी।

•

पथ की दूरी, विकट अड़चनें,
हमको विचलित कर न सकेंगी,
जग की विषम आँधियाँ भी तो,
रत्ती भर भय भर न सकेंगी,
ओठों पर तूफान सँभाले, दो तट मिलें परस्पर हँस कर,
सागर सहमा-सा रह जाये, सारी दुनिया हिल जायेगी।

•

चाँद लहर में, लहर चाँद में,
युग-युग से मिल-जुल कर बहते,
पवन फूल से, मधुप कली से,
गुपचुप मन की बातें कहते,
राशि-राशि रस-रूप-गंध ले, यदि दो फूल खिलें उपवन में,
उनकी सुरभित साँसों से ही, सारी दुनिया खिल जायेगी।

•

तुम को पा पागल बन बैठा,
तन-मन मेरा झूम रहा है,
जीवन के मृदु नील-कमल को
मन-मधुकर हँस चूम रहा है,
रुनझुन-रुनझुन, अमृत के घट, अधर-अधर पर छलकाती-सी,
यदि शशि-बाला भू पर उतरे, तब तो जम महफिल जायेगी।

•

अरे, अकेले राह न कटती,
दूरी प्रतिपल बढ़ती जाती,
संग-साथ में पथ कट जाता,
मंजिल स्वयं पास है आती,
स्नेह-प्यार से बढ़कर जग में और न कोई संबल होता,
चट्टानों में भी यदि चाहो, कोई राह निकल आयेगी।

•

नाचे मन-मोर रे !

•

निष्ठा ने द्वार-द्वार, आशा के दीप धरे,
किरनों की वंशी से गीतों के स्वर निखरे।

•

कुंठा के कान ऐंठ, नाचे मन-मोर रे,
कलरव में बदल गया, चिड़ियों का शोर रे,
सुषमा के सागर में, शापित युग डूब मरे।

•

प्राणों से फूट पड़ा, निर्झर विश्वास का,
इन्द्रधनुष उदित हुआ पुलकित उल्लास का,
सावन ने झूम-झूम, रीते मधु-पात्र भरे।

•

नया रंग, नया रूप, नये शूल-फूल रे,
मौसम ने ओढ़ लिये, रेशमी दुकूल रे,
बासन्ती झोंकों से, पियराये पात झरे।

•

आँगन में नाच उठी, कंचन की भोर रे,
कोर-कोर भिगो रही, प्रीति की हिलोर रे,
नयनों की भाषा ने, जीवन के ताप हरे।

•

दीप मेरे, टिमटिमाना छोड़ दे !

•

दीप मेरे,
स्नेह-प्लावित वर्तिका को ज्योति-गंगा में नहा ले,
टिमटिमाना छोड़ दे !

•

ऊर्ध्व-उज्ज्वल शिखा तेरी, अकम्पित जलती रही है,
कालिमा पी, रश्मियों की गोद में पलती रही है।
प्रीति की पगडंडियों को, सुलगते संकल्प दे कर,
मिलन-पथ से जोड़ दे।
दीप मेरे, टिमटिमाना छोड़ दे !

•

मृत्यु की परछाइयों से मिल चुका है, जानता है,
दस्तकें भी सुन चुका है, आहटें पहिचानता है।
प्रखर किरणों के शरों से, अँधेरों की व्यूह-रचना,
अकेले ही तोड़ दे।
दीप मेरे, टिमटिमाना छोड़ दे !

•

प्राण-बाती जल रही है, क्या पता कल भी जलेगी ?
एक झौके में सहज ही देह मिट्टी में मिलेगी ।
भभक कर बुझ जा भले ही, अग्नि-छंदों का सृजन कर,
गीत को नव मोड़ दे ।
दीप मेरे, टिमटिमाना छोड़ दे !

•

यादों की पतली-सी टहनी

•

बहुत दिनों के बाद अचानक नयी दूब अँकुरायी है,
यादों की पतली-सी टहनी, जीवन पर झुक आयी है ।

•

मौसम के आँगन में फागुन, नाच-नाच बौराया है,
अमलतास, टेसू, गुलाब में, एक नशा-सा छाया है ।
गंध-कलश सज गये आम पर, महुआ भी मुसकाया है,
कोकिल के अनुरागी स्वर ने मिलन-गीत दुहराया है ।
बुझे कोयलों में फिर किसने नयी आग सुलगायी है ?
यादों की पतली-सी टहनी, जीवन पर झुक आयी है ।

•

आज प्रकृति के रोम-रोम पर फिर से पानी आया है,
धूप-धुले उजले कपोल पर किसने रंग चढ़ाया है ?
टूटे बंध नयी चोली के, अंग-अंग गदराया है,
बहुत दिनों में कुसुमायुध ने हँसकर बाण चलाया है !
तपती दोपहरी पर गुपचुप, फिर से बदली छायी है,
यादों की पतली-सी टहनी, जीवन पर झुक आयी है ।

•

अरहर के नूपुर बजते हैं, चना ताल दे गाता है,
फूली सरसों की चूनर में गीत सिमटता जाता है।
अल्हड़ अलसी से लुक-छिप कर, गेहूँ आँख मिलाता है,
यह रस-लास-हुलास सभी कुछ कैसे मन सह पाता है !
सँझवाती में आकर किसने अपनी ज्योति मिलायी है,
यादों की पतली-सी टहनी, जीवन पर झुक आयी है।

•

दूर, वहाँ, झुरमुट से देखो, चाँद निकलता आता है,
आसमान में, निरावरण हो, छिप कर रूप नहाता है।
पछुवा की केवल आहट से, लाजों मर-मर जाता है,
शिमले में झर रही बर्फ की शीतलता मन पाता है।
संझा के जूड़े में फिर से सोनजुही मुसकायी है,
यादों की पतली-सी टहनी, जीवन पर झुक आयी है।

भीगे वसन, सूर्य को कोई, देखो अर्घ्य चढ़ाता है,
चम्पे पर सोने का पानी, फिसल-फिसल रह जाता है।
कनक-लता के फूल-फूल पर मन मेरा मँड़राता है,
बिसरे गीतों को अनजाने, रह-रह कर दुहराता है।
बहुत दिनों में किरन-कामिनी मुझसे झिझक-लजायी है।
यादों की पतली-सी टहनी, जीवन पर झुक आयी है।

•

पर मुझको कभी भुलाना मत–

•

तुम चाहे जितनी दूर रहो, पर मुझको कभी भुलाना मत !
जिन सपनों में मैं हँस न सकूँ, नयनों में उन्हें बसाना मत !

•

तुमने आँगन के कोने में जो बेला कभी लगाया था,
अपने हाथों से सींच-सींच, धीरे-धीरे पनपाया था,
वह लदा हुआ फूलों से, उसमें रस-गंध तुम्हारी है,
तुमने जाते-जाते रुक कर, उस पर आँचल फैलाया था,
वेणी में बेला गूँथो पर आँखों में आँसू लाना मत।

•

तुमने घर की दीवारों पर जो स्वस्तिक-चिह्न बनाये थे,
उन पर अपने हाथों से फिर हल्दी-चाँवल छिटकाये थे,
धुँधले होकर धीरे-धीरे, अब वे भी मिटते जाते हैं–
जीवन के सारे कष्ट-क्लेश, तुमने हँस कर दुलराये थे,
अब मन के तुलसी चौरे पर सुधियों के दीप जलाना मत।

•

वह मैना भी अब नहीं रही जो तुम्हें प्राण से प्यारी थी,
मर गयी नाम रटते-रटते वह तो ममता की मारी थी,
उसके उस खाली पिंजड़े में अब याद तुम्हारी बसती है–
तुम उस पर बलि-बलि जाती थीं, वह भी तुम पर बलिहारी थी,
बीती बातों के सागर में अब डूब-डूब उतराना मत ।

●

सावन में झूले डाल-डाल, सखियों संग पेंगे भरती थीं,
अंबर में अंचल उड़ते थे, रह-रह कर बूँदें झरती थीं,
जिस तरु पर झूले पड़ते थे, वह खड़ा-खड़ा ही सूख गया–
अब धूल वहाँ पर उड़ती है, तब परियाँ वहाँ उतरती थीं,
तुम 'नीर भरी बदली' बनकर, भीतर-भीतर भर आना मत।

●

अटपटे प्रेम के बोलों में जो गीत अधर से फूटे थे,
वे बिखर गये थे जीवन में, अंतर ने हँसकर लूटे थे,
तुम दूर देश की वासिनि हो पर अब भी मुझमें गाती हो–
जब विदा हुई थीं, तब मेरे आँसू के तार न टूटे थे,
तुम मेरे गीत-विहंगों को खाली हाथों लौटाना मत ।

●

मैं माधव बन उतर पड़ा हूँ–

●

मैं माधव बन उतर पड़ा हूँ,
वन की डाली-डाली में ।
मेरे गीत मुखर होते हैं,
तरु-तरु की हरियाली में ।

●

रंग-अबीर उड़ा दिशि-दिशि में,
रंग-रँगीला जग-आँगन है,
प्रीति-पगी हर गली-गली है,
बहकी-बहकी मधुर पवन है,
कलियों ने घूँघट खोले हैं,
झूम रहा प्रत्येक सुमन है,
सौंधी-सौंधी-सी मिट्टी पर,
फागुन ने धर दिये चरन हैं,
मेरा ही अनुराग विहँसता,
हर गुलाब की लाली में ।

●

नये अर्थ मिल गये स्वरों को
कंठ-कंठ में नये गान हैं,
नया-नया-सा जीवन लगता,
नव उमंग है, नये प्राण हैं,
पीली-पीली-सी धरती है
नीला-नीला आसमान है,
मधुमय सन्ध्या की लाली है,
नये गीत गाता विहान है,
रंग भर दिया मेरे स्वर ने
नंदन की शेफाली में।

•

सतरंगी चूनर से दीपित
प्रकृति-वधू का अंग-अंग है,
लहरों ने नूपुर बाँधे हैं
झाँझर झनकाता अनंग है,
भीग गया सब कुछ केसर में
जन-जन के मन में उमंग है,
कोयल के स्वर में जादू है,
नाच उठी जीवन-तरंग है,
मेरा ही कवि बोल रहा है
कलकंठिनि मतवाली में।

•

नयन-नयन रतनारे-से हैं,
साँस-साँस में नव-यौवन है,
अधर-अधर में सुधा-सरोवर,
पुलक-पुलक में नव कम्पन है,
मादकता में डूब रहा जग,
प्राण-प्राण का मधुर मिलन है,
सौरभ की मंगल-वर्षा में
अली-कली का गठबंधन है,
मेरे जीवन की मदिरा ही
छलक उठी जग-प्याली में।

•

टेसू ने पिचकारी मारी
लाल-लाल सब दिग-दिगंत है,
बौराये आमों ने खुल कर
बिखराया सोना अनन्त है,
पीत वसन सरसों के तन में
रूप-राशि जागी ज्वलन्त है,
वन में रंगों का मेला है
कण-कण में उतरा वसन्त है,
मेरे प्राणों की वंशी ही
गूँज रही वनमाली में।

•

बैठ कर अकेले

•

आमों में बौर लगे,
गंधों के मेले ।
कैसे मैं सहन करूँ?
बैठ कर अकेले !

•

मधु-भीगे बोल-बोल,
सपनीले नयन-नयन ।
नयनों की भाषा में
बोल रही लाज-किरन ।
प्रीति-पगे प्रानों में
कैसे उन्माद भरूँ ?
बैठ कर अकेले !
आमों में बौर लगे,
गंधों के मेले !

•

चटकीले टेसू पर
बहुत तेज आग जगी ।
रंग-भरे पनघट पर
सपनों की भीर लगी ।
नाच किसी आँगन में
कैसे मैं फूल झरूँ ?
बैठ कर अकेले !
आमों में बौर लगे,
गंधों के मेले !

•

गेहूँ के प्रान बँधे
सरसों के आँचल में ।
भौंरों का स्नेह-जाल
फैला है शतदल में ।
लहर-लहर लास भरी
किसको मैं आज वरूँ ?
बैठ कर अकेले !
आमों में बौर लगे,
गंधों के मेले ।

•

मेघों की छाँव तले
धूप-धान गले मिले ।
अंग-अंग दमक रहे,
खूब मिले, भले मिले ।

रोम-रोम भींज रहे
किसपर ये अधर धरूँ?
बैठ कर अकेले!
आमों में बौर लगे,
गंधों के मेले!

•

सारस की जोड़ी में
आज खुशी दूनी है।
पर मेरे अंतर की,
गाँव-गली सूनी है।
तुम मेरे पास कहाँ—
किसपर मैं जिऊँ-मरूँ?
बैठ कर अकेले!
आमों में बौर लगे,
गंधों के मेले।

•

पूजा के दो फूल न पाये!

•

अब क्या गजरा, अब क्या कजरा, भोर न देखा, शाम हो गयी।
अब क्या नैया और खिवैया, विधना ही जब वाम हो गयी!

•

प्रेम-गीत की प्रथम पंक्ति ही अभी न पूरी हो पायी थी,
चन्द्र-किरण हँस कर फूलों पर अभी न पल भर सो पायी थी,
लाल-लाल चूनर पहनी थी, जाने कैसे श्याम हो गयी?

•

अभी महावर की लाली थी, तन की हल्दी छूट न पायी,
प्रीति-पगी बरमाला की भी एक पंखुरी टूट न पायी,
साँस-साँस थी अभी सुहागिन, अभी-अभी निष्काम हो गयी।

•

मन की मतवाली मीरा ने हुलसित हो, नूपुर बाँधे थे,
हाथों ने वीणा थामी थी, साँस-साँस ने स्वर साधे थे,
नर्तन-गायन के पहले ही हर धड़कन बेकाम हो गयी।

•

मधु-ऋतु आयी, कोयल कूकी, रस बरसा, मैं झूम न पायी,
मिलन-पर्व की धूम मची थी, पद-रज भी मैं चूम न पायी,
मन ही मन मुसकायी भर थी, कली-कली बदनाम हो गयी !

•

पुष्पित हुई न प्राण-वल्लरी, पूजा के दो फूल न पाये,
जग-आँगन सावन-घन बरसे, मेरे घर घनश्याम न आये,
केवल एक झलक पायी थी, किन्तु स्वयं नीलाम हो गयी !

•

जीवन की कोरी चादर पर जाने कैसे दाग लग गया,
वाक्य न पूरा हो पाया था, कैसे पूर्णविराम लग गया ?
गतिशीला हर डगर पिया की, मेरे लिए विराम हो गयी ।

कोई गले लगाता

•

मुझ करील का मधुप-तितलियों से बोलो क्या नाता ?

•

मुझमें काँटे ही काँटे हैं, मैं काँटों से खेल रहा हूँ,
पग-पग पर काँटे ही काँटे, हँस कर काँटे झेल रहा हूँ,
काँटों पर चलता आया हूँ, काँटों पर पलता आया हूँ—
निपट कँटीले पथ पर अपनी गाड़ी स्वयं ढकेल रहा हूँ !
बारह-मासी पतझर ही तो मैं अपने में पाता;
मुझ करील का मधुप-तितलियों से बोलो क्या नाता ?

•

हाँ बसन्त का नाम सुना है, छू न सका पर उसकी छाया,
सारे जग पर फूल लुटाये, कभी भूल कर द्वार न आया !
मैं रस-रूप-गंध से अब तक कोसों दूर रहा आया हूँ,
जीवन की नीरसता में ही मैंने जीवन का रस पाया ।
मैं रसहीन, कुरूप, कँटीला कैसे रस बरसाता ?
मुझ करील का मधुप-तितलियों से बोलो क्या नाता ?

•

मुझ में फूल न फूले अब तक, कलियाँ ने कब प्रीति दिखायी ?
रस से भरी घटाएँ भी तो कभी भूलकर द्वार न आयीं ।
मैं एकाकी शून्य-दृष्टि से देख रहा जगती की माया,
कभी किसी का प्यार न पाया, नित्य प्रार्थनायें दुहरायीं ?
काश, कभी सपनों में कोई मुझ पर प्यार लुटाता !
मुझ करील का मधुप-तितलियों से बोलो क्या नाता ?

•

क्या न कभी मेरे अधरों पर कोई अपने अधर धरेगा ?
रोम-रोम पर रस बरसा कर युग-युग का अनुताप हरेगा ।
मैं तो स्नेह-प्यार का भूखा, मुझको केवल प्यार चाहिये,
क्या न कभी बाहों में भर कोई मुझ पर शीतल छाँह करेगा ?
युग-युग से बस एक साध है, कोई गले लगाता—
मुझ करील का मधुप-तितलियों से बोलो क्या नाता ?

•

युद्ध और शान्ति

•

युद्ध घृणित अभिशाप जगत का
फिर भी हाँ, लड़ना पड़ता है,
दुश्मन की तोपों के आगे
वक्ष खोल अड़ना पड़ता है ।
शान्ति नहीं झुकना सिखलाती,
केवल न्याय-सत्य की पोषक,
अन्यायी का शीश कुचलने
महाकाल बनना पड़ता है ।
युद्ध सृजन का संहारक है
मानव-जीवन का कलंक है,
युद्ध दनुजता का प्रतीक है,
हाँ, अनर्थ-गढ़, घृणा-पंक है ।
साहस, शौर्य, एकता से ही
युद्ध सदा जीता जाता है,
न्यायरथी अभियान शौर्य का,
अपराजित है, निष्कलंक है ।
युद्ध शान्ति-सीता की जग में,
अग्नि-परीक्षा लेता आया,

दुःशासन बन मानवता की
लाज-हरण करने अकुलाया ।
किन्तु अभय ने सदा अनय की
लंका भस्मभूत कर दी है,
मानव-मन के राम-कृष्ण ने
मानवता को सदा बचाया ।
युद्ध अहं का तुंग शृंग है,
दर्व-दर्प का दावानल है ।
युद्ध नाश का जन्म-सखा है
महानाश का बड़वानल है ।
शान्ति सदा आनन्ददायिनी
शुभ्र ज्योत्स्ना की शोभा है ।
शान्ति राष्ट्र-मस्तक का चंदन
जीवन का शाश्वत संबल है ।
युद्ध विनाशक, विघटक, ध्वंसक,
साम्राज्यों का ज्वाला-मुख है,
नर-बलि से गर्वित होता है,
महाप्रलय का ही आमुख है ।
शान्ति प्रेम, ममता, समता
का सदा वरण करती आयी है ।
शान्ति मरण का नाम नहीं है,
शान्ति सृजन का सच्चा सुख है ।

●

सूर्य निकला जागरण का

●

उठ चुके गांडीव अब तो
विजय हो कर ही रहेगी ।
मृदुल केसर-क्यारियों में
आग धू-धू जल रही है,
बर्फ की कोई पहाड़ी
फिर अचानक गल रही है,
आज नंदन में हमारे
हो रही विध्वंस-लीला,
फूल सब मुरझा गए हैं
पड़ गया है चाँद पीला,
थम गई झेलम कि जैसे
साँस उस की रुक गई है,
मातृ-भू कब तक भला यह
जुल्म की आँधी सहेगी ?

●

छँट गई बदली गगन से
छिन्न सारे आवरण हैं,
बाँध कर सिर से कफन अब
बढ़ गए अगणित चरण हैं;
एकता की बाहुओं में
वज्र कोई भर गया है,
फूट का शैतान मानो
सदा को ही मर गया है,
आन पर हम मर मिटेंगे
यह हमारी घोषणा है,
कौन-सी चट्टान है जो
सामने आ कर अड़ेगी ?

•

भीड़ है बलि-पंथियों की
पर्व आया है मरण का,
रक्त-गंगा में नहा कर
सूर्य निकला जागरण का,
अनय से हम लड़ रहे हैं,
हाथ है हम पर अभय का,
जानते थे एक दिन हम,
सामना होगा प्रलय का,
शौर्य, साहस, एकता का
कवच हम धारण किए हैं,
युद्ध की जड़ खोद देंगे,
शान्ति-गंगा फिर बहेगी ।

•

आँख जो हम पर तनी है
बिना हिचके फोड़ देंगे,
हाथ जो हम पर उठा है,
सहज ही हम तोड़ देंगे,
एक इंच जमीन का भी
अपहरण होने न देंगे,
बहुत दिन रोई मनुजता
अब उसे रोने न देंगे,
न्याय का रथ है हमारा,
प्रभु हमारे सारथी हैं,
कौन-सी वह शक्ति है जो
अर्जुनों से अब लड़ेगी ?

•

वीरो हिन्दुस्तान के

•

वीरो हिन्दुस्तान के
तुम जाग्रति के ज्योति-पुंज हो, तुम हो गीत विहान के।

•

मत भूलो, यह देश तुम्हारा रणधीरों की खान है,
असुर-मर्दिनी रणचंडी का तुम्हें प्राप्त वरदान है,
सिंहवाहिनी रिपुविदारिणी माँ की तुम संतान हो,
रक्त-अक्षरों से सर्जित तुम वीर-काव्य के प्राण हो,
अग्नि-चरण धर बढ़े चलो तुम, मुँह मोड़ो तूफान के
वीरो हिन्दुस्तान के।

•

मत भूलो, युग-युग से तुम ही हिम-गिरि के विश्वास हो,
धन्य हुए बलिदान तुम्हीं से, तुम उज्ज्वल इतिहास हो,
बिजली भरी धमनियों के तुम गरम लहू हो. साँस हो,
वज्र भरे भुज-दंडों पर तुम उठे हुए आकाश हो,
शैतानों को मजा चखा दो, शेरो हिन्दुस्तान के,
वीरो हिन्दुस्तान के।

•

समरांगण में जूझ रहे रणधीरों के अभिमान हो,
जो शहीद हो गये वतन पर उनकी तुम ही आन हो,
तुम में साहस का सागर है, हिम-गिरि के उत्थान हो,
निर्भय टूट पड़ो दुश्मन पर, तुम अर्जुन के बाण हो,
मत भूलो, तुम ही रक्षक हो, मां के कीर्ति-वितान के,
वीरो हिन्दुस्तान के।

•

आजादी के सजग संतरी, तुमको प्रति पल जागना,
चूके नहीं निशाना कोई, ऐसी तोपें दागना,
ज्वालामुखी फूट सकता है, कभी न हिम्मत हारना,
रौद्र रूप प्रलयंकर बन कर, गिन-गिन शीश उतारना,
तुम अभेय दीवार राष्ट्र की, तुम प्रतीक सम्मान के,
वीरो हिन्दुस्तान के।

कोई अकेला लड़ रहा है

●

मैं नहीं लड़ता–
मगर कोई अकेला लड़ रहा है।

●

देखते ही रुंड-मुंडों से भरा मैदान,
खून से लथ-पथ मनुजता, जग उठा शैतान !
मैं नहीं बढ़ता–
मगर अर्जुन हमारा बढ़ रहा है।

●

हो रहे बम-वर्षकों से ध्वस्त अब भगवान,
क्रूर, बर्बर दानवों से लड़ रहा इंसान।
मैं नहीं चौंका–
मगर नर-सिंह चौंका, भिड़ गया है।

●

तोप का मुँह खुल पड़ा है, बिछ गयी बारूद,
कौन माँ का लाड़ला है, जो चुकाये सूद ?
मैं कहाँ अड़ता–
मगर कोई हिमालय अड़ गया है।

●

अभी यह बम का धड़ाका, अभी हाँ, भू-चाल !
प्रलय का मुँह फट गया है, काल है विकराल !
मैं कहाँ गड़ता–
मगर कोई बहादुर गड़ गया है।

●

धरा धँसना चाहती है, झुक गया आकाश,
क्रूरता निर्वसन है अब, नाचता है नाश
मैं कहाँ जागा–
मगर अब राष्ट्र सारा जग गया है।

●

शान्ति के हिम-शिखर पर भी चढ़ गये अंगार,
शीश अगणित चढ़ रहे हैं, गल रहे हैं प्यार !
मैं कहाँ चढ़ता–
मगर सौभाग्य कोई चढ़ रहा है।

●

देश की ललकार पर सब जा रहे घर छोड़,
चुनौती रण-बाँकुरों की, है सिरों की होड़ !
मैं कहाँ लुटता–
मगर सर्वस्व कोई लुट रहा है।

●

जड़ दिये माँ के मुकुट में किसी ने बलिदान–
किसी ने सिन्दूर अपना, किसी ने निज प्राण।
मैं कहाँ जड़ता–
मगर हाँ, रत्न कोई जड़ रहा है।

●

गीले नयन नमन उन सब को–

•

अमर रहे स्वातंत्र्य हमारा–
युग-युग मुक्त गगन में लहरे, 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ।'

•

महक रही खुशबू से धरती,
इन्द्रधनुष अम्बर में फूले ।
मन-प्राणों में नयी उमंगें,
नयन-नयन में सपने झूले ।
ज्योतिर्मय सुख की किरणों ने, काट दिया दुख का अँधियारा ।
–अमर रहे स्वातंत्र्य हमारा ।

•

सिर से कफ़न बाँध जो निकले,
सीने पर हँस गोली खायो ।
देश-प्रेम का प्याला पी कर,
झूम क्रान्ति ज्वाला भड़कायो ।
पुण्य-पर्व पर उन्हें न भूलें, जिनने दुश्मन को ललकारा ।
अमर रहे स्वातंत्र्य हमारा ।

आजादी के खातिर जिनने,
बलिवेदी पर प्राण चढ़ाये ।
पग-पग संघर्षों से जूझे,
अंगारों पर कदम बढ़ाये ।
श्रद्धा-सुमन समर्पित उनको, जिनने हँस कर तन-मन वारा ।
अमर रहे स्वातंत्र्य हमारा ।

•

वे अब भी अज्ञात कि जिनने
केवल तिल-तिल मिटना जाना ।
टूट गये, पर झुके न तिल भर,
सदा देश को सब कुछ माना ।
उनकी याद हरी हो आयी, उमड़ पड़ी आँसू का धारा ।
अमर रहे स्वातंत्र्य हमारा ।

•

अमर शहीदों की समाधियाँ,
बलिदानी गाथायें गातीं ।
चिर उपेक्षिता भले रही हों–
फिर भी फूली नहीं समातीं ।
गीले नयन नमन उन सब को, जिनने मिट कर देश सँवारा ।
अमर रहे स्वातंत्र्य हमारा ।

•

एकता का दीप

दीप यह बुझने न पाये,
आँधियों को चुनौती दे, लौ अकम्पित जगमगाये।

एकता का दीप जो हमने जलाया, जल रहा है,
अँधेरों के फन कुचल कर, गर्व उनका दल रहा है,
राष्ट्र-ध्वज के रंग तीनों, और गाढ़े हो गये हैं—
एक मंजिल के लिए ही, कारवाँ अब चल रहा है।
अब न कोई शक्ति ऐसी, जो हमें तिल भर डिगाये,
दीप यह बुझने न पाये।

फूट की दाढ़ें सुमति ने, हमेशा को तोड़ दी हैं,
दिशाहीना यात्रायें ज्योति-पथ से जोड़ दी हैं,
मोम सारा गल-पिघल कर बन गया फौलाद अब तो—
एक पथ पर बढ़ रहे, पगडंडियाँ सब छोड़ दी हैं,
अब न कोई भूल कर भी, व्यर्थ में आँखें दिखाये,
दीप यह बुझने न पाये।

ओस भी अंगार है अब, बर्फ शोला बन गया है,
वज्र-मंडित बाहुएँ हैं, वक्ष भी अब तन गया है,
मस्जिदों में रामध्वनि तो मन्दिरों में आयतें हैं—
एक मानव-धर्म में ही राष्ट्र का मन सन गया है।
जिन्दगी कर दी वसीयत, रक्त से अक्षर बनाये,
दीप यह बुझने न पाये।

ज्योति-पथ पर पग बढ़ाना

दीप, मेरे बुझ न जाना,
प्यार-पूजा-समर्पण का, शेष अब भी ऋण चुकाना।
ताल-गति-लय से अपरिचित,
अनकसे मृदु तार मन के।
साधना-आराधना में
स्वर न फूटे लौ-लगन के।
अग्नि-वीणा पर अभी तो
तुझे दीपक-राग गाना।
दीप, मेरे बुझ न जाना।

मृत्तिका के क्षुद्र तन में,
प्राण-बाती जल रही है।
रूप-छवि-दर्शन-पिपासा
लोचनों में पल रही है।
अश्रु-जल से सींच अंतर
प्रीति के पौधे उगाना।
दीप, मेरे बुझ न जाना।

स्नेह का पाथेय ले तू,
अभय आगे बढ़ रहा है।
सफलता-सोपान क्रमशः
सहज ही तू चढ़ रहा है।
साँझ की अभ्यर्थना में
भैरवी के स्वर जगाना।
दीप, मेरे बुझ न जाना।

नियति के झंझा-झकोरे,
बाल बाँका कर न पाये।
पुलक-प्राणों ने निरन्तर
वंदना के गीत गाये।
निशा का कालुष्य पी तू
ज्योति-पथ पर पग बढ़ाना।
दीप, मेरे बुझ न जाना।

पीठ फेर ली है बहार ने,
साँसें अब तक सुरभीली हैं।
ऐसा कुछ घट गया कि जिससे—
मन उदास, आँखें गीली हैं।
यादों के दरके दर्पन में, रूप किसी का अब भी हँसता,
मन-मंदिर की मूर्ति न टूटी, गीत अर्चना के लिख डाले।

धोखा देते रहे उजाले

•

मुश्किल से दुनिया में मिलते, मन का मीत बनाने वाले।
बड़े जतन से पाल रखे हैं, दिल का दर्द, पाँव के छाले।

•

राज-मार्ग ठुकरा पग मेरे,
पगडण्डी की ओर मुड़े हैं।
गीत-गीत के शब्द-शब्द से
जीवन के संदर्भ जुड़े हैं।
टूट गयीं फौलादी कसमें, सपनों को वनवास मिल गया,
तम ने नहीं मुखौटे बदले, धोखा देते रहे उजाले।

•

अनजाने, आँखों में सहसा
कभी किरकिरी पड़ जाती है।
सीधी-सच्ची बात शूल-सी
कभी हृदय में गड़ जाती है।
प्यार नहीं प्रतिदान माँगता, उपालंभ गुपचुप सह लेता,
प्रतिवादी बनने के पहले, पड़ जाते ओठों पर ताले।

•

दूधिया रातें

●

अँधेरी कलमुँही रातें, लिपट कर साथ सोती हैं,
मगर ये दूधिया रातें, मुझे सोने नहीं देतीं।

सलौने रूप की गागर, नहीं इनसे सँभलती है,
बहुत चाहा कि मैं ढो दूँ, मुझे ढोने नहीं देतीं।

नयन में चाहता इनके, रँगीले स्वप्न बो दूँ मैं,
लजीली मान-मुद्रायें मुझे बोने नहीं देतीं।

असुन्दर भाल पर मेरे, लगातीं स्नेह का चन्दन,
करूँ क्या, आँसुओं से ये चरण धोने नहीं देतीं।

लिटा कर गोद में मुझको, लुटातीं प्यार के मोती,
मधुरतम एक भी क्षण व्यर्थ ये खोने नहीं देतीं।

न कुछ कहतीं, न कुछ सुनतीं, मधुर सुधियाँ जगाती हैं,
किसी की याद में मुझको, मगर रोने नहीं देतीं।

किरन की लेखनी ले कर, प्रणय के गीत लिखती हैं,
अटपटे गीत की बातें, सुबह होने नहीं देतीं।

अँधेरी कलमुँही रातें, लिपट कर साथ सोती हैं,
मगर ये दूधिया रातें, मुझे सोने नहीं देतीं।

●

मन का शृंगार न हो पाया

●

तन को आभूषण मिले बहुत, मन का शृंगार न हो पाया।
प्राणों का विनिमय हुआ मगर, अनुबंधित प्यार न हो पाया।

●

दस्तक दे मधुऋतु लौट गयी,
आहट तक मुझको मिली नहीं,
मेरे आँगन की सोनजुही
इसलिए अभी तक खिली नहीं।
मनचाहे रेखा-चित्रों में, फूलों ने अपने रंग भरे,
रह गयी कला चुपचाप खड़ी, सपना साकार न हो पाया।

●

सह-यात्री बनना सरल नहीं,
कुछ साथ चले, कुछ पिछड़ गये।
कहने को मीत अनेक मिले,
कुछ बने रहे, कुछ बिछुड़ गये।
गलियाँ पड़ाव तक ले आयीं, हर राज-मार्ग ने भटकाया,
वन-फूल उपेक्षित रहे सदा, उनका सत्कार न हो पाया।

●

रस-सिक्त मधुर सम्बन्धों के
घन दिन-दिन होते गये घने ।
आनन्द-घनों की वर्षा से
हम पूरक से पर्याय बने ।
तट के ओंठों को चूम लहर, हो गयी विलय मँझधारों में,
मनचली लहरियों पर अब तक, तट का अधिकार न हो पाया ।

•

तुमसे युग-युग का नाता है

•

शब्द-चित्र में रूप तुम्हारा, सब से अलग नजर आता है ।
ऐसा कुछ लगता है जैसे, तुम से युग-युग का नाता है ।

•

अनदेखा व्यक्तित्व तुम्हारा,
रूपायित हो उठा नयन में ।
तोड़ अपरिचय की दीवारें,
आ बैठे हो अन्तर्मन में ।
सहज हृदय-संवाद हो रहा,
बिन बोले ही बोल रहे हो ।
जीवन-रामायण के पन्ने
धीरे-धीरे खोल रहे हो ।
चुम्बकीय व्यक्तित्व तुम्हारा, जादू-सा कुछ कर जाता है ।
शब्द-चित्र में रूप तुम्हारा, सब से अलग नजर आता है ।

•

एक साथ जोगी-भोगी थे,
अनासिक्तमय मन पाया था ।
दुख के काँटों पर चल कर ही
द्वार तुम्हारे सुख आया था ।

•

अनुरागी अंतर की भाषा,
पढ़ कर भी, कितने पढ़ पाये ?
सुख-सुविधा के संगी-साथी,
दुर्दिन में भी काम न आये ।
नेह निभाते रहे अंत तक, यही सोच मन अकुलाता है ।
शब्द-चित्र में रूप तुम्हारा, सब से अलग नजर आता है ।

•

पकी निबौरी में भी तुमने
अंगूरों का रस पाया था ।
स्नेह-सिक्त आत्मीय भाव से
दुश्मन को भी अपनाया था ।
चारित्रिक गरिमा की महिमा,
शब्द-शब्द से फूट रही है ।
क्षमा, दया, ममता की मणियाँ,
सारी दुनिया लूट रही है ।
एक अपूर्व प्रभा-मंडल में, तेजस्वी मुख मुसकाता है ।
शब्द-चित्र में रूप तुम्हारा, सब से अलग नजर आता है ।

•

संकल्पों को सूली दे दो

•

साँसों पर पहरे बैठे हैं, मौत खड़ी है द्वार पर–
दो दिन हँसी-खुशी से जी लें, क्षण-भंगुर संसार में ।

•

फाकामस्ती मिली भूख को, मृग-जल पाया प्यास ने,
मनुहारों को बाँझ कर दिया, असमय के संन्यास ने ।
स्वप्न बिके, घुट गयीं उमंगें, होली जली हुलास की,
उतर गया पौरुष का पानी, नींव हिली विश्वास की ।
संकल्पों को सूली दे दी, समझौतों के नाम पर,
गंधहीन, रंगीन कागजी फूल मिले उपहार में ।

•

चेहरों के अदृश्य मुखौटे, बड़ा कठिन पहचानना,
अपनी हृदय-धड़कनों को भी, कभी न अपनी मानना ।
आँख खोल कर दुनिया देखी, परख चुका इन्सान को,
पोखर में गंगा-जल पाया, भिक्षुक में भगवान को ।
हाथ लगे मूँगे के दाने, मणि-मुक्ता के दाम पर,
मन के मोती मिले न अब तक, दुनिया के बाजार में ।

•

गली-गली में अनजानापन, पग-पग पर भटकाव है,
हृदय-हृदय के बीच खाइयाँ, और कई अटकाव हैं।
चंदन-वन जल रहे स्वयं ही, दाहक मलय बयार है,
फूलों में अंगार छिपे हैं, श्रीहत शुष्क बहार है।
भँवरों पर भँवरों के घेरे, अधटूटी पतवार है,
जीर्ण-शीर्ण नैया खेता जा, जग-जीवन की धार में।

•

बढ़ता रहा निरन्तर आगे, अपने सहज स्वभाव से,
गिनता रहा मील के पत्थर, अनासक्तिमय भाव से।
चलते-चलते शाम हो गयी, छाले आये पाँव में,
फिर भी अब तक पहुँच न पाया, गंतव्यों के गाँव में।
धोखा खाता रहा हमेशा, हर चढ़ाव पर, मोड़ पर,
अब न फिसल, औंधे मुँह गिरना, सर्पाकार उतार में।

•

सुख का दावेदार नहीं हूँ

•

चुका-चुका तन, बुझा-बुझा मन,
लेकिन मैं बीमार नहीं हूँ।

•

बेमौसम पतझर ने आकर, जीवन की बगिया उजाड़ दी।
आवारा उद्दंड हवा ने, सुख-स्वप्नों की जड़ उखाड़ दी।
चाहों की बेलें मुरझायीं, अरमानों के फूल झर गये।
आशाओं की कलियाँ झुलसीं, बिना मौत संकल्प मर गये।
अन्तर्ज्योति प्रज्वलित फिर भी
बुझा हुआ अंगार नहीं हूँ।

•

प्राण-बाँसुरी बजते-बजते, जाने क्यों बेसुरी हो गयी?
अंतर की रसमयी रागिनी, कोलाहल के बीच खो गयी।
अब न साथ देते सुर मेरा, क्रुद्ध-क्षुब्ध हैं-ऐंठे-ऐंठे।
गीत अकविता के घिराव से, कुंठित हो अनशन कर बैठे।
अनचाहा समझौता कर लूँ,
मैं इतना लाचार नहीं हूँ।

•

भक्ति-भाव से, धूप-दीप ले, मंदिर अगणित बार गया मैं।
सुप्त देवता कभी न जागे, शंख बजा कर हार गया मैं।
पूजा-पाठ, मात्र आडम्बर, दर्शन की लौ मंद पड़ गयी।
अर्पित होने के पहले ही, फूलों की सब गंध उड़ गयी।
अंध-भक्ति का पुण्य लूटने,
मैं कदापि तैयार नहीं हूँ।

•

आत्मीय बन गये अपरिचित, मित्रों ने भी आँख फेर ली।
सम्बन्धों ने तेवर बदले, अँधियारों ने राह घेर ली।
अपने ही घर के आँगन में, दूरी की फट पड़ीं दरारें।
देहरी-द्वार बात न पूछें, ताने मार, हँसें दीवारें।
दुःख से बहुत पुराना रिश्ता,
सुख का दावेदार नहीं हूँ।

•

गीतों का प्रतिदान न दो तुम

•

अब कोई वरदान न दो तुम—
हँस कर तिक्त हलाहल दे दो, धन-दौलत सम्मान न दो तुम।
जी भर गाया, प्यार लुटाया,
जनम-जनम का कर्ज चुकाया,
गायक को गायक ने जाना, अन्य किसी ने कब पहिचाना?
मेरे गीतों को दुलराओ, मुझ को झूठा मान न दो तुम।

•

थका-थका मन, चुका-चुका तन,
बुझते दीपक-सा यह जीवन,
और न अब फूलों से लादो, भार न उनका सह पाऊँगा,
अंत समय कंधा दे देना, यह रेशम-परिधान न दो तुम।

•

जीवन ढोया, कभी न रोया,
अधर-अधर पर गीत सँजोया,
पाने की कुछ चाह न मन में, मात्र लुटाने की अभिलाषा,
गुपचुप कुटिया में गाने दो, यश का उच्च मकान न दो तुम।

•

रीता-रीता, फिर भी जीता,
सदा जहर हँस-हँस कर पीता,
ने का अलग मजा है, बिना पिये कोई क्या जाने,
ाहे, दो घूँट पिला दो, गुण गा-गा कर प्राण न लो तुम!

•

अब...क्या बोलूँ ? अंतर खोलूँ ?
व्यथा-कथा ले दर-दर डोलूँ ?
मैंने अब तक कलम न बेची, गीतों का कुछ मोल न माँगा,
ढलती साँझ, उजड़ती बेला, गीतों का प्रतिदान न दो तुम!

•

रोशनआरा

•

शबनम एकाएक कि जैसे बनी धधकता अंगारा,
सीने से बम बाँध, टैंक से टकरायी रोशनआरा।

•

इन्सानी चोलों के भीतर दुष्ट भेड़िये बैठे थे,
बारूदी ताकत की दम पर अहंकार से ऐंठे थे।
सरेआम नापाम बमों से नर-संहार मचाते थे,
माताओं की अस्मत लुटती, बेटे भूने जाते थे।
ऐसे दृश्य देखकर अपने मन-प्राणों को धिक्कारा,
मरने को तैयार हो गयी बिना झिझक रोशनआरा।

•

बारी उमर, अभी बचपन की लाली छूट न पायी थी,
यौवन की मुसकान ठीक से मुख पर फूट न पायी थी।
मां की आँखों की पुतली थी, जीवन की उजियारी थी,
परम लाड़ली सारे घर की, खुशियोंकी फुलवारी थी।
बलिवेदी पर शीश चढ़ाने, स्वयं मरण को ललकारा।
मातृभूमि का कर्ज चुकाकर, अमर हुई रोशनआरा।

•

सा टैंक सामने आगे बढ़ता आता था,
बच्चों-बूढ़ों की छाती दलता जाता था।
शी दृश्य देखकर, उबल पड़ी वह नव बाला,
अन्तर की चिनगारी भड़की बन भीषण ज्वाला।
बिजली-सी टूटी दुश्मन पर, ठगा रह गया हत्यारा,
एक नया इतिहास लिख गयी तेजमयी रोशनआरा।

•

देश-प्रेम की आग न बुझती, जुल्मों से, मनमानी से,
बलि की बेल हरी होती है, बलिदानों के पानी से।
देश-भक्ति की आग सुलगती रही कुँवारी साँसों में—
जननी पर मर मिटने वाले जीवित हैं इतिहासों में।
'आजादी का सूरज चमके, मिले नर्क से छुटकारा,'
यही मूक सन्देश छोड़कर, बिदा हुई रोशनआरा।

शौर्यमयी ऐसी बेटी को, दुनिया भूल न पायेगी,
उसकी गौरव-गाथा गाकर फूली नहीं समायेगी।
सिद्ध हुई सच्ची सपूतिनी, देश-प्रेम की दीवानी,
हम सब उसको याद करेंगे, भर कर आँखों में पानी।
आजादी के लिए मौत को हँसकर उसने स्वीकारा,
बलि-पथ में आलोक भर गयी, बलिदानी रोशनआरा।

•

नाम ही केवल तुम्हारे नाम से सम्बद्ध है

•

नाम ही केवल तुम्हारे नाम से सम्बद्ध है।
हर सुनहला प्रात जैसे शाम से सम्बद्ध है।

तपस्या में डूब मन की कलुषता तो धुल गयी,
वासना वैरागिनी पर काम से सम्बद्ध है।

जिन्दगी वनवासिनी सीता सरीखी हो गयी,
किन्तु हर धड़कन हृदय की राम से सम्बद्ध है।

मधुर यादों के रँगीले रंग फीके पड़ गये,
याद ही जब हो गयी, गुमनाम से सम्बद्ध है।

स्वयं के प्रतिबिम्ब तेवर बदल कर छलने लगे,
आइना दिल का किसी बदनाम से सम्बद्ध है।

राज-पथ पर अजनबीपन की दुकानें सज गयीं,
किन्तु पगडण्डी अभी भी ग्राम से सम्बद्ध है।

'सूर' की आँखें न जिसको देख पायीं अंत तक,
पारदर्शी काव्य उसका श्याम से सम्बद्ध है।

•

सीढ़ी का पत्थर रहने दो !

सीढ़ी का पत्थर रहने दो, मत पूजा-पाषाण बनाओ।
बीच द्वार पर पड़ा हुआ हूँ,
दर्शन पाने अड़ा हुआ हूँ,
मंदिर की अंतिम सीढ़ी में–
बड़ी जतन से जड़ा हुआ हूँ,
मुझे अर्चाचित ही रहने दो, मुझपर चढ़ तुम दर्शन पाओ।
सृजन-यात्रा हुई न पूरी,
काव्य-साधना अभी अधूरी,
प्रतिपल मैं आगे बढ़ता हूँ,
किन्तु न घटती पथ की दूरी,
पृष्ठ अभी कोरे रहने दो, मत संस्तुति की मुहर लगाओ।
पद-रज पा पावन होने दो,
जीवन वृन्दावन होने दो,
धुलने दो कालुष्य अहम् का–
दर्प-गर्व मन का खोने दो,
काव्य-साधकों के सम्मुख तुम, मत मेरा उपहास कराओ।
सीढ़ी का पत्थर रहने दो, मत पूजा-पाषाण बनाओ।